

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

मन्त्रमहार्णवे पुर्रखण्डे नरमतरङ्गे श्रीरामकृतं  
॥ श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्रम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्रम् ॥

ऋषय ऊचुः

ऋषे लोहगिरिं प्रापुः सीतारिहकतः।  
भगरान् किं र्याधाद्रामस्तुसर्गं ब्रूहि सत्वरम् ॥ 1 ॥

राल्मीकिरुराच

मायामानुषदेहोहयं ददर्शाग्रे कपीश्वरम्।  
हनुमन्तुं जगत्सामी बालार्कसमतेजसम् ॥ 2 ॥

स सत्वरं समागम्य साष्टाङ्गं प्रणिपत्य च।  
कृताञ्जलिपुटो भूरा हनुमान् राममव्रवीत् ॥ 3 ॥

हनुमानुराच

धन्योहस्मि कृतकृत्योहस्मि दृष्ट्वा त्रैलोक्यपङ्कजम्।  
योगिनामप्यगम्यं च संसारभयनाशनम् ॥ 4 ॥

पुरुषोत्तम देवेश कर्तव्यं तन्निवेद्यताम्।

श्रीराम उवाच

जनस्थानं कपिश्रेष्ठ कोहप्यागत्य रिदेहजाम् ॥ 5 ॥

हतवान् रिप्रसंरेशो मारीचानुगते मयि।  
गरेष्य साम्प्रतं वीर जानकीहरणे परः ॥ 6 ॥

त्रयाहगम्यो न को देशस्तु च ज्ञानरतां वरः।  
सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रितारवरः प्रभुः ॥ 7 ॥

ঋষয উচুঃ

কো মন্ত্রঃ কিং চ তদ্ব্যনং তন্নো ব্রুহি যথার্থতঃ।  
কথাসুধারসং পীৎরা ন তৃপ্যামঃ পরন্তপ ॥ ৪ ॥

রাল্মীকিরুরাচ

মন্ত্রং হনুমতো রিদ্ধি ভুক্তিমুক্তিপ্রদায়কম্।  
মহারিষ্টমহাপাপমহাদুঃখনিরারণম্ ॥ ৯ ॥

অন্যং হনুমতো মন্ত্রং সহস্রনামসংজ্ঞিতম্।  
জানন্ত ঋষযঃ সর্বে মহাদুরিতনাশনম্ ॥ ১০ ॥

যস্য সংস্মরণাৎ সীতাং লঙ্করা রাজ্যমকণ্টকম্।  
রিভীষণায় চ দদারাত্মানং লঙ্করান্ যথা ॥ ১১ ॥

ঋষয উচুঃ

সহস্রনামসন্মন্ত্রং দুঃখাদ্যৌঘনিরারণম্।  
রাল্মীকে ব্রুহি নস্তূর্ণং শুশ্র্বামঃ কথাং পরাম্ ॥ ১২ ॥

রাল্মীকিরুরাচ

শৃংরন্ত ঋষযঃ সর্বে সহস্রনামকং স্তরম্।  
স্তরানামুত্তমং দির্যং সর্বার্থস্য প্রকাশকম্ ॥ ১৩ ॥

অস্য শ্রীহনুমৎসহস্রনামস্তোত্রমহামন্ত্রস্য।

শ্রীরামচন্দ্রোভগরান্ ঋষিঃ - শিরসি।

অনুষ্টুপ্ছন্দঃ - মুখে।

হনুমান্ পরমাত্মা দেবতা - হৃদয়ে।

ওং হ্রীং শ্রীং হ্রাং হ্রৌং বীজং - গুহ্যে।

শ্রীরিতি শক্তিঃ - পাদযোঃ।

লঙ্কারিধ্বংসনাযেতি করচম্।

কিলি কিলি ভূ ভূ কারিণ ইতি কীলকম্।  
মম সর্বারিষ্টনিরারণার্থে জপে রিনিযোগঃ ॥

ওং ঐং হ্রীং শ্রীং হনুমতে রামদূতায় অঙ্গুষ্ঠাভ্যাং নমঃ।

ওং লঙ্কারিধ্বংসনায় তর্জনীভ্যাং নমঃ।

ওং অঞ্জনাগর্ভসংভূতায় মধ্যমাভ্যাং নমঃ।

ওং শাকিনীডাকিনীরিধ্বংসনায় অনামিকাভ্যাং নমঃ।

ওং কিলি কিলি ভূ ভূ কারিণে ভীষণায়

হনুমতে দেবায় কনিষ্ঠিকাভ্যাং নমঃ।

ওং ঐং হ্রীং শ্রীং হ্রাং হ্রীং হ্রুং হ্রৈং হ্রৌং

করতলকরপৃষ্ঠাভ্যাং নমঃ।

এরং হৃদযাদিন্যাসঃ।

ভূর্ভুরঃ সুররোমিতি দিগ্বন্ধঃ ॥

### ধ্যানম্

স্ফাটিকাভং স্বর্ণকান্তিং দ্বিভুজং চ কৃতাজলিম্।

কুণ্ডলদ্বয়সংশোভিমুখাস্তোজং হরিং ভজেৎ ॥

প্রতপ্তস্বর্ণর্ণাভং সংরক্তারুণলোচনম্।

সুগ্রীরাদিযুতং ধ্যায়েৎ পীতাম্বরসমারূতম্ ॥

গোষ্পদীকৃতরারশিং পুচ্ছমস্তকমীশ্বরম্।

জ্ঞানমুদ্রাং চ বিভ্রাণং সর্ভালঙ্কারভূষিতম্ ॥

উদ্যদাদিত্যসঙ্কাসমুদারভুজরিক্রমম্।

কন্দর্পকোটিলারণ্যং সর্ভরিদ্যারিশারদম্ ॥

শ্রীরামহৃদযানন্দং ভক্তকল্পমহীরুহম্।

অভয়ং বরদং দোর্ভ্যাং কলযে মারুতান্বজম্ ॥

অথ স্তোত্রম্

শ্রীরামচন্দ্র উরাচ

হনুমান্ শ্রীপ্রদো রায়ুপুত্রো রুদ্রোহনঘোহজরঃ।  
অমৃত্যুরীররীশ্চ গ্রামারাসো জনাশ্রয়ঃ ॥ 1 ॥

ধনদো নিৰ্গুণঃ শুরো রীরো নিধিপতিৰ্মুনিঃ।  
পিঙ্গাক্ষো ররদো রাগ্নী সীতামোকরিনাশকঃ ॥ 2 ॥

শিরঃ শৰঃ পরোহর্যক্তো ব্যক্তার্যক্তো ধরাধরঃ।  
পিঙ্গকেশঃ পিঙ্গরোমা শ্ৰুতিগম্যঃ সনাতনঃ ॥ 3 ॥

অনাদিৰ্ভগরান্ দেবো বিশ্বহেতুৰ্জনাশ্রয়ঃ।  
আরোগ্যকর্তা বিশ্বেশো বিশ্বনাথো হরীশ্বরঃ ॥ 4 ॥

ভর্গো রামো রামভক্তঃ কল্যাণঃ প্রকৃতিস্থিরঃ।  
বিশ্বস্তুরো বিশ্বমূর্তিবিশ্বাকারশ্চ বিশ্বপঃ ॥ 5 ॥

বিশ্বাত্মা বিশ্বসেব্যোহথ বিশ্বা বিশ্বহরো রবিঃ।  
বিশ্বচেষ্ঠো বিশ্বগম্যো বিশ্বধ্যৈঃ কলাধরঃ ॥ 6 ॥

প্লবঙ্গমঃ কপিশ্রেষ্ঠো জ্যেষ্ঠো বিদ্যারনেচরঃ।  
বালো বৃদ্ধো যুরা তত্ত্বং তত্ত্বগম্যঃ সখা হৃজঃ ॥ 7 ॥

অঞ্জনাসুনুরর্যগ্রো গ্রামশান্তো ধরাধরঃ।  
ভূৰ্ভুরস্মৰ্মহলোকো জনোলোকস্তপোহর্যয়ঃ ॥ 8 ॥

সত্যমোক্সারগম্যশ্চ প্রণরো ব্যাপকোহমলঃ।  
শিরো ধর্মপ্রতিষ্ঠাতা রামেষ্টঃ ফল্গুনপ্রিয়ঃ ॥ 9 ॥

গোষ্পদীকৃতরারশিঃ পূর্ণকামো ধরাপতিঃ।  
রক্ষোঘ্নঃ পুণ্ডরীকাক্ষঃ শরণাগতরৎসলঃ ॥ 10 ॥

जानकीप्राणदाता च रक्षः प्राणापहारकः।  
पूर्णसद्गुः पीतरासाः दिराकरसमप्रभः ॥ 11 ॥

द्रोणहर्ता शक्तिनेता शक्तिराम्कसमारकः।  
रम्फोष्णो रामदूतश्च शकिनीजीरहारकः ॥ 12 ॥

डुडुक्कारहतारातिगर्भः परतभेदनः।  
हेतुमान् प्रांशुबीजं च रिश्वभर्ता जगद्गुरुः ॥ 13 ॥

जगत्त्राता जगन्नाथो जगदीशो जनेश्वरः।  
जगत्पिता हरिः श्रीशो गरुडस्मयभङ्गनः ॥ 14 ॥

पार्थध्वजो रायुपुत्रोहमितपुच्छोहमितप्रभः।  
ब्रम्हपुच्छः परब्रम्हापुच्छो रामेष्ट एर च ॥ 15 ॥

सुग्रीरादियुतो ज्ञानी रानरो रानरेश्वरः।  
कल्लस्थायी चिरञ्जीवी प्रसन्नश्च सदाशिरः ॥ 16 ॥

सन्नतिः सद्गतिर्भुक्तिमुक्तिदः कीर्तिदायकः।  
कीर्तिः कीर्तिप्रदश्चैर समुद्रः श्रीप्रदः शिरः ॥ 17 ॥

उदधिक्रमणो देरः संसारभयनाशनः।  
रार्धिवक्त्रनकृद् रिश्वजेता रिश्वप्रतिष्ठितः ॥ 18 ॥

लङ्कारिः कालपुरुषो लङ्केशगृहभङ्गनः।  
डूतारसो रासुदेरो रसुञ्जिडुरनेश्वरः ॥ 19 ॥

श्रीरामदूतः कृष्णश्च लङ्काप्रासादभङ्गकः।  
कृष्णः कृष्णस्तुतः शान्तः शान्तिदो रिश्वपारनः ॥ 20 ॥

रिश्वभोक्ता च मारीचः ब्रम्हचारी जितेन्द्रियः।  
उर्ध्वगो लाङ्गुली माली लाङ्गुलहताराम्कसः ॥ 21 ॥

समीरतनुजो रीरो रीरमारो जयप्रदः।  
जगन्मङ्गलदः पुण्यः पुण्यश्रवणकीर्तनः ॥ 22 ॥

पुण्यकीर्तिः पुण्यगतिर्जगत्पारनपारनः।  
देरेशो जितरोधश्च रामभक्तिरिधायकः ॥ 23 ॥

ध्याता ध्येयो नभस्साम्क्षी चेतश्चैतन्यरिग्रहः।  
ज्ज्ञानदः प्राणदः प्राणो जगत्प्राणः समीरणः ॥ 24 ॥

रिडीषणप्रियः शुरः पिप्ललाश्रयसिद्धिदः।  
सुहृत्सिद्धाश्रयः कालः कालभङ्गकभर्जितः ॥ 25 ॥

लक्ष्मणनिधनस्त्रायी लक्ष्मादाहक ङ्गस्वरः।  
चन्द्रसूर्याग्निनेत्रश्च कालाग्निः प्रलयान्तकः ॥ 26 ॥

कपिलः कपिशः पुण्यराशिर्द्वादशराशिगः।  
सर्वाश्रयोऽप्रमेयात्मा रेरत्यादिदिराकरः ॥ 27 ॥

लक्ष्मणप्राणदाता च सीताजीवनहेतुकः।  
रामध्येयो हृषीकेशो रिषुभक्तो जटी बली ॥ 28 ॥

देरारिदर्पहा होता कर्ता हर्ता जगत्प्रभुः।  
नगरग्रामपालश्च शुद्धो बुद्धो निरन्तरः ॥ 29 ॥

निरञ्जनो निर्रिकल्पो गुणातीतो भयङ्करः।  
हनुमांश्च दुराराध्यस्तपः साध्योऽमरेश्वरः ॥ 30 ॥

जानकीघनशोकोत्थतापहर्ता परात्परः।  
राङ्गयः सदसद्रूपः कारणं प्रकृतेः परः ॥ 31 ॥

भाग्यदो निर्मलो नेता पुच्छलक्ष्मणदाहकः।  
पुच्छवद्भयातुधानो यातुधानरिपुप्रियः ॥ 32 ॥

ছায়াপহারী ভূতেশো লোকেশঃ সদগতিপ্রদঃ।  
প্লবঙ্গমেশ্বরঃ ক্রোধঃ ক্রোধসংরক্তলোচনঃ ॥ 33 ॥

ক্রোধহর্তা তাপহর্তা ভক্তাভয়রপ্রদঃ।  
ভক্তানুকম্পী রিশ্বেশঃ পুরুহুতঃ পুরন্দরঃ ॥ 34 ॥

অগ্নির্বিভারসুর্ভাস্বান্ যমো নিরুতিরের চ।  
ররুণো রায়ুগতিমান্ রায়ুঃ কৌবের ঈশ্বরঃ ॥ 35 ॥

রিশ্চন্দ্রঃ কুজঃ সৌম্যো গুরুঃ কার্যঃ শনৈশ্চরঃ।  
রাহুঃ কেতুর্মরুদ্বোতা ধাতা হর্তা সমীরজঃ ॥ 36 ॥

মশকীকৃতদেরারিঃ দৈত্যারির্মধুসূদনঃ।  
কামঃ কপিঃ কামপালঃ কপিলো রিশ্বরজীরনঃ ॥ 37 ॥

ভাগীরথীপদাস্তোজঃ সেতুবন্ধরিশারদঃ।  
স্বাহা স্বধা হরিঃ কর্যং হর্যকর্যপ্রকাশকঃ ॥ 38 ॥

স্বপ্রকাশো মহারীরো লঘুশ্চাহমিতরিক্রমঃ।  
প্রডীনোডীনগতিমান্ সদগতিঃ পুরুষোত্তমঃ ॥ 39 ॥

জগদাত্মা জগদ্যোনির্জগদন্তো হনন্তকঃ।  
রিপাপ্যা নিঙ্কলঙ্কশ্চ মহান্ মহদহঙ্কৃতিঃ ॥ 40 ॥

খং রায়ুঃ পৃথিবী হ্যাপো রহির্দিকপাল এর চ।  
ক্ষেত্রজ্ঞঃ ক্ষেত্রপালশ্চ পল্লরলীকৃতসাগরঃ ॥ 41 ॥

হিরণ্মযঃ পুরাণশ্চ খেচরো ভূচরো মনুঃ।  
হিরণ্যগর্ভঃ সূত্রাত্মা রাজরাজো রিশাম্পতিঃ ॥ 42 ॥

বেদান্তবেদ্যোদগীধশ্চ বেদবেদাঙ্গপারগঃ।  
প্রতিগ্রামস্থিতিঃ সাধ্যঃ স্ফূর্তিদাতা গুণাকরঃ ॥ 43 ॥



नक्कटमाली भूतात्मा सुरभिः कल्लपादपः।  
चिन्तामणिर्गुणनिधिः प्रजापतिरनुत्तमः ॥ 44 ॥

पुण्यश्लोकः पुरारातिर्ज्योतिष्मान् शररीपतिः।  
किलिकिल्याररत्तुभूतप्रेतपिशाचकः ॥ 45 ॥

अणत्रयहरः सूक्ष्मः शूलः सर्गतः पुमान्।  
अपस्मारहरस्मर्ता श्रुतिर्गाथा स्मृतिर्मनुः ॥ 46 ॥

स्वर्गद्वारः प्रजाद्वारो मोक्षद्वारः कपीश्वरः।  
नादरूपः परब्रह्मा ब्रह्मब्रह्मा पुरातनः ॥ 47 ॥

एको नैको जनः शुकलः स्वयंज्योतिरनाकुलः।  
ज्योतिर्ज्योतिरनादिश्च सात्त्विको राजसत्तमः ॥ 48 ॥

तमोहर्ता निरालम्बो निराकारो गुणकरः।  
गुणाश्रयो गुणमयो बृहत्कायो बृहद्यशाः ॥ 49 ॥

बृहद्वनुर्बृहत्पादो बृहन्मूर्धा बृहत्स्वनः।  
बृहत्कर्णो बृहन्नासो बृहन्नेत्रो बृहदगलः ॥ 50 ॥

बृहज्जानुर्बृहत्कायो बृहत्पुच्छो बृहत्करः।  
बृहदगतिर्बृहत्सेर्यो बृहन्नोकफलप्रदः ॥ 51 ॥

बृहच्छक्तिर्बृहद्वाङ्मयाफलदो बृहदीश्वरः।  
बृहन्नोकनुतो द्रष्टा रिद्यादाता जगद्गुरुः ॥ 52 ॥

देवाचार्यः सत्यरादी ब्रह्मरादी कलाधरः।  
सप्तपातालगामी च मलयाचलसंश्रयः ॥ 53 ॥

उत्तराशास्त्रितः श्रीदो दिर्यौषधिरशः खगः।  
शाखामृगः कपीन्द्रश्च पुराणः श्रुतिसंवरः ॥ 54 ॥

চতুরো ব্রাহ্মণো যোগী যোগগম্যঃ পরাৎপরঃ।  
অনাদিনিধনো র্যাসো রৈকুঠঃ পৃথিবীপতিঃ ॥ 55 ॥

পরাজিতো জিতারাতিঃ সদানন্দশ্চ ঈশিতা।  
গোপালো গোপতির্গোপ্তা কলিঃ কালঃ পরাৎপরঃ ॥ 56 ॥

মনোরোগী সদাযোগী সংসারভযনাশনঃ।  
তত্ত্বদাতা চ তত্ত্বজ্ঞস্তত্ত্বং তত্ত্বপ্রকাশকঃ ॥ 57 ॥

শুদ্ধো বুদ্ধো নিত্যমুক্তো যুক্তাকারো জয়প্রদঃ।  
প্রলযোহমিতমাযশ্চ মাযাতীতো রিমৎসরঃ ॥ 58 ॥

মাযানির্জিতরক্ষশ্চ মাযানির্মিতরিষ্টপঃ।  
মাযাশ্রযশ্চ নির্লেপো মাযানির্ৰঞ্চকঃ সুখঃ ॥ 59 ॥

সুখী সুখপ্রদো নাগো মহেশকৃতসংস্করঃ।  
মহেশ্বরঃ সত্যসন্ধঃ শরভঃ কলিপারনঃ ॥ 60 ॥

রসো রসজ্ঞঃ সম্মানস্তপশ্চক্ষুশ্চ ভৈরবঃ।  
ঘ্রাণো গন্ধঃ স্পর্শনং চ স্পর্শোহহঙ্কারমানদঃ ॥ 61 ॥

নেতিনেতীতি গম্যশ্চ রৈকুঠভজনপ্রিয়ঃ।  
গিরীশো গিরিজাকান্তো দুর্ভাসাঃ করিরঙ্গিরাঃ ॥ 62 ॥

ভৃগুর্ভসিষ্ঠশ্চরনস্তম্বুরনারদোহমলঃ।  
বিশ্বক্ষেত্রং বিশ্ববীজং বিশ্বনেত্রশ্চ বিশ্বপঃ ॥ 63 ॥

যাজকো যজমানশ্চ পারকঃ পিতরস্তথা।  
শ্রদ্ধা বুদ্ধিঃ ক্ষমা তন্দ্রা মন্ত্রো মন্ত্রযুতঃ স্বরঃ ॥ 64 ॥

রাজেন্দ্রো ভূপতিঃ কঠমালী সংসারসারথিঃ।  
নিত্যঃ সম্পূর্ণকামশ্চ ভক্তকামধুগুত্তমঃ ॥ 65 ॥

গণপঃ কীশপো ভ্রাতা পিতা মাতা চ মারুতিঃ।  
সহস্রশীর্ষা পুরুষঃ সহস্রাক্ষঃ সহস্রপাৎ ॥ 66 ॥

কামজিৎ কামদহনঃ কামঃ কাম্যফলপ্রদঃ।  
মুদ্রাপহারী রক্ষোঘ্নঃ ক্ষিতিভারহরোবলঃ ॥ 67 ॥

নখদংষ্ট্রায়ুধো রিষুভক্তোহভয়রপ্রদঃ।  
দর্পহা দর্পদো দৃপ্তঃ শতমূর্তিরমূর্তিমান্ ॥ 68 ॥

মহানিধির্মহাভোগো মহাভাগো মহার্থদঃ।  
মহাকারো মহাযোগী মহাতেজা মহাদ্যুতিঃ ॥ 69 ॥

মহাকর্মা মহানাদো মহামন্ত্রো মহামতিঃ।  
মহাশযো মহোদারো মহাদেরাঅকো রিভুঃ ॥ 70 ॥

রুদ্রকর্মা ক্রুরকর্মা রত্ননাভঃ কৃতাগমঃ।  
অস্ত্রোধিলঙ্ঘনঃ সিংহো নিত্যোধর্মঃ প্রমোদনঃ ॥ 71 ॥

জিতামিত্রো জয়ঃ সামো বিজযো রায়ুরাহনঃ।  
জীরদাতা সহস্রাংশুর্মুকুন্দো ভূরিদক্ষিণঃ ॥ 72 ॥

সিদ্ধার্থঃ সিদ্ধিদঃ সিদ্ধসঙ্কল্পঃ সিদ্ধিহেতুকঃ।  
সপ্তপাতালভরণঃ সপ্তর্ষিগণরন্দিতঃ ॥ 73 ॥

সপ্তাক্ষিসঙ্গমো বীরঃ সপ্তদ্বীপোরুমগুলঃ।  
সপ্তাঙ্গরাজ্যসুখদঃ সপ্তমাতৃনিষেরিতঃ ॥ 74 ॥

সপ্তলোকৈকমকুটঃ সপ্তহোতা স্বরাশ্রয়ঃ।  
সপ্তচ্ছন্দোনিধিঃ সপ্তচ্ছন্দঃ সপ্তজনাশ্রয়ঃ ॥ 75 ॥

সপ্তসামোপগীতশ্চ সপ্তপাতালসংশ্রয়ঃ।  
মেধারীকীর্তিদঃ শোকহারী দৌর্ভাগ্যনাশনঃ ॥ 76 ॥

सर्वरथ्यकरो भर्गो दोषघ्नः पुत्रपौत्रदः ।  
प्रतिरादिमुखस्तुष्टो दुष्टचित्तप्रसादनः ॥ 77 ॥

पराभिचारशमनो दुःखघ्नो बन्धमोक्षदः ।  
नरद्वारपुराधारो नरद्वारनिकेतनम् ॥ 78 ॥

नरनारायणस्तुत्यो नरनाथो महेश्वरः ।  
मेखली करटी खड्गी ब्राजिष्णुर्बिष्णुसारथिः ॥ 79 ॥

बह्व्योजनरिस्त्रीर्णपुच्छः पुच्छहतासुरः ।  
दुष्टग्रहनिहन्ता च पिशाचग्रहघातुकः ॥ 80 ॥

बालग्रहरिनाशी च धर्मो नेता कृपाकरः ।  
उग्रकृत्योग्ररेगश्च उग्रनेत्रः शतक्रतुः ॥ 81 ॥

शतमन्युस्तुतः स्तुत्यः स्तुतिः स्तोता महाबलः ।  
समग्रगुणशाली च रयग्नो रक्षारिनाशकः ॥ 82 ॥

रक्षोग्नहस्तो ब्रह्मेशः श्रीधरो भक्तवत्सलः ।  
मेघनादो मेघरूपो मेघवृष्टिनिवारकः ॥ 83 ॥

मेघजीवनहेतुश्च मेघश्यामः पराङ्मुखः ।  
समीरतनयो बोद्धा तद्भुरिद्यारिषारदः ॥ 84 ॥

अमोघोऽमोघवृद्धिश्च ईष्टदोहनिष्टनाशकः ।  
अर्थोहनर्थापहारी च समर्थो रामसेरकः ॥ 85 ॥

अर्थीधन्यः सुरारातिः पुण्डरीकाम्बु आम्बुः ।  
सङ्कर्षणो रिशुद्धात्मा रिद्याराशिः सुरेश्वरः ॥ 86 ॥

अचलोद्धारको नित्यः सेतुकृद् रामसारथिः ।  
आनन्दः परमानन्दो मत्स्यः कूर्मो निधिः शमः ॥ 87 ॥

বরাহো নারসিংহশ্চ রামনো জমদগ্নিজঃ।  
রামঃ কৃষ্ণঃ শিরো বুদ্ধিঃ কল্কী রামাশ্রযো হরঃ ॥ 88 ॥

নন্দী ভৃঙ্গী চ চণ্ডী চ গণেশো গণসেরিতঃ।  
কর্মাধ্যক্ষঃ সুরাধ্যক্ষো রিশ্রামো জগতাংপতিঃ ॥ 89 ॥

জগন্নাথঃ কপিশ্রেষ্ঠঃ সর্ভারাসঃ সদাশ্রযঃ।  
সুগ্রীরাতিস্তুতঃ শান্তঃ সর্ভকর্মা প্লবঙ্গমঃ ॥ 90 ॥

নখদারিতরক্ষশ্চ নখায়ুধরিশারদঃ।  
কুশলঃ সুধনঃ শেষো রাসুকিঃ তক্ষকঃ স্বরঃ ॥ 91 ॥

স্বর্ণরণো বলাঢ্যশ্চ রামপূজ্যোহঘনাশনঃ।  
কৈরল্যদীপঃ কৈরল্যো গরুডঃ পন্নগো গুরুঃ ॥ 92 ॥

কিল্যারাহতারাতিগর্ভঃ পর্তভেদনঃ।  
রজ্রাস্তো রজ্ররেগশ্চ ভক্তো রজ্রনিরারকঃ ॥ 93 ॥

নখায়ুধো মণিগ্রীরো জ্বালামালী চ ভাস্করঃ।  
প্রৌচপ্রতাপস্তপনো ভক্ততাপনিরারকঃ ॥ 94 ॥

শরণং জীরনং ভোক্তা নানাচেষ্টো হ্যচঞ্চলঃ।  
সুখস্হোহষ্টাস্যহা দুঃখশমনঃ পরনাত্মজঃ ॥ 95 ॥

পারনঃ পরনঃ কান্তো ভক্তাগঃ সহনোবলঃ।  
মেঘনাদরিপুর্মেঘনাদসংহতরাক্ষসঃ ॥ 96 ॥

ক্ষরোহক্ষরো রিনীতাত্মা রানরেশঃ সতাজ্জতিঃ।  
শ্রীকণ্ঠঃ শিতিকণ্ঠশ্চ সহায়ঃ সহনায়কঃ ॥ 97 ॥

অস্থূলস্থনপুর্ভর্গো দেবঃ সংহতিনাশনঃ।  
অধ্যাত্মরিদ্যাসারশ্চ অধ্যাত্মকুশলঃ সুধীঃ ॥ 98 ॥

অকল্মষঃ সত্যহেতুঃ সত্যগঃ সত্যগোচরঃ।  
সত্যগর্ভঃ সত্যরূপঃ সত্যং সত্যপরাক্রমঃ ॥ 99 ॥

অঞ্জনাপ্রাণলিঙ্গশ্চ রায়ুরংশোদ্ভরঃ সুধীঃ।  
ভদ্ররূপো রুদ্ররূপঃ সুরূপশ্চিত্ররূপধৃৎ ॥ 100 ॥

মৈনাকরন্দিতঃ সূক্ষ্মদর্শনো রিজযো জয়ঃ।  
ক্রান্তদিভ্জাগুলো রুদ্রঃ প্রকটীকৃতরিক্রমঃ ॥ 101 ॥

কম্বুকণ্ঠঃ প্রসন্নাত্মা হ্রস্বনাসো বৃকোদরঃ।  
লম্বোষ্ঠঃ কুণ্ডলী চিত্রমালী যোগরিদাং ররঃ ॥ 102 ॥

রিপশ্চিৎকরিরানন্দরিগ্রহোহনন্যশাসনঃ।  
ফাল্গুনীসুনুরর্যত্রো যোগাত্মা যোগতৎপরঃ ॥ 103 ॥

যোগরেদ্যো যোগকর্তা যোগযোনির্দিগম্বরঃ।  
অকারাদিক্ষকারান্তর্গণনির্মিতরিগ্রহঃ ॥ 104 ॥

উলুখলমুখঃ সিংহঃ সংস্কৃতঃ পরমেশ্বরঃ।  
শ্লিষ্টজঙ্ঘঃ শ্লিষ্টজানুঃ শ্লিষ্টপাণিঃ শিখাধরঃ ॥ 105 ॥

সুশর্মাহমিতশর্মা চ নারাষণপরাষণঃ।  
জিষুর্ভরিষুঃ রোচিষুর্গর্হসিষুঃ স্থাগুরের চ ॥ 106 ॥

হরী রুদ্রানুকৃদ্বৃক্ষকম্পনো ভূমিকম্পনঃ।  
গুণপ্রবাহসূত্রাত্মা রীতরাগঃ স্তুতিপ্রিয়ঃ ॥ 107 ॥

নাগকন্যাভযধ্বংসী রুক্ষরর্ণঃ কপালভৃৎ।  
অনাকুলো ভরোপাযোহনপাযো রেদপারগঃ ॥ 108 ॥

অক্ষরঃ পুরুষো লোকনাথো রক্ষঃ প্রভুর্দৃঢ়ঃ।  
অষ্টাঙ্গযোগফলভুক্ সত্যসন্ধঃ পুরুষ্ঠুতঃ ॥ 109 ॥

শ্মশানস্থাননিলযঃ প্রেতরিদ্রারণক্ষমঃ।  
পঞ্চাঙ্করপরঃ পঞ্চমাতৃকো রঞ্জনধ্বজঃ ॥ 110 ॥

যোগিনীবৃন্দরন্যশ্চ শক্রঘ্নোহনন্তরিক্রমঃ।  
ব্রহ্মচারীন্দ্রিয়রিপুর্ধৃতদণ্ডো দশাত্মকঃ ॥ 111 ॥

অপ্রপঞ্চঃ সদাচারঃ শুরসেনরিদারকঃ।  
বৃদ্ধঃ প্রমোদশানন্দঃ সপ্তজিহ্বাপতির্ধরঃ ॥ 112 ॥

নরদ্বারপুরাধারঃ প্রত্যগ্রঃ সামগায়কঃ।  
ষট্চক্রধামা স্বর্লোকোভযহ্নমানদোহমদঃ ॥ 113 ॥

সর্ৱরশ্যকরঃ শক্তির্নেতা চানন্তমঙ্গলঃ।  
অষ্টমূর্তিধরো নেতা রিরূপঃ স্বরসুন্দরঃ ॥ 114 ॥

ধূমকেতুর্মহাকেতুঃ সত্যকেতুর্মহারথঃ।  
নন্দিপ্রিয়ঃ স্বতন্ত্রশ্চ মেখলী সমরপ্রিয়ঃ ॥ 115 ॥

লোহাঙ্গঃ সর্ৱরিদ্ধন্ত্রী ষট্চকলঃ শর্ৱ ঈশ্বরঃ।  
ফলভুক্ ফলহস্তশ্চ সর্ৱকর্মফলপ্রদঃ ॥ 116 ॥

ধর্মাধ্যক্ষো ধর্মফলো ধর্মো ধর্মপ্রদোহর্থদঃ।  
পঞ্চরিংশতিতত্ত্বজ্ঞস্তারকব্রহ্মতৎপরঃ ॥ 117 ॥

ত্রিমার্গরসতির্ভীমঃ সর্ৱদুঃখনিবর্হণঃ।  
উর্জস্বান্ নির্গলঃ শূলী মালী গর্ভো নিশাচরঃ ॥ 118 ॥

রক্তাম্বরধরো রক্তো রক্তমালারিভূষণঃ।  
রনমালী শুভাঙ্গশ্চ শ্ৱেতঃ শ্ৱেতাম্বরো যুরা ॥ 119 ॥

জযো জযপরীরারঃ সহস্ররদনঃ কপিঃ।  
শাকিনীডাকিনীযক্ষরক্ষোভূতৌঘভঞ্জনঃ ॥ 120 ॥

सद्योजातः कामगतिर्ज्ञानमूर्तिर्यशस्करः ।  
शङ्खुतेजाः सार्वभौमो रिष्णुभक्तः प्लवङ्गमः ॥ 121 ॥

चतुर्नरतिमल्लङ्घः पौलस्त्यबलदर्पहा ।  
सर्वलक्ष्मीप्रदः श्रीमानङ्गदप्रिय ङ्गडितः ॥ 122 ॥

स्मृतिर्वीजं सुरेशानः संसारभयनाशनः ।  
उत्तमः श्रीपरीरारः श्रीभूदुर्गाच कामदृक् ॥ 123 ॥

सदागतिर्मातरिश्वा रामपादाब्जषट्पदः ।  
नीलप्रियो नीलरर्णो नीलरर्णप्रियः सुहृत् ॥ 124 ॥

रामदूतो लोकबन्धुरन्तरात्मा मनोरमः ।  
श्रीरामध्यानकृद्भीरः सदा किंपुरुषस्तुतः ॥ 125 ॥

रामकार्यान्तरङ्गश्च शुद्धिर्गतिरनामयः ।  
पुण्यश्लोकः परानन्दः परेशः प्रियसारथिः ॥ 126 ॥

लोकस्वामी मुक्तिदाता सर्वकारणकारणः ।  
महाबलो महारीरः पारारारगतिर्गुरुः ॥ 127 ॥

समस्तलोकसाम्नी च समस्तसुररन्दितः ।  
सीतासमेत श्रीरामपादसेवाधुरन्करः ॥ 128 ॥

राल्मीकिरुराच  
इति नाम्नां सहस्रेण स्तुतो रामेण रातभूः ।  
उराच तं प्रसन्नात्मा सक्वायात्मानमर्ययम् ॥ 129 ॥

श्रीहनुमानुराच  
ध्यानस्येदमिदं ब्रह्म मत्परं समुपस्थितः ।  
स्वामिन् दयानिधे राम ज्ञातोहसि कपिना मया ॥ 130 ॥



ৎরদ্ধ্যাননিরতা লোকে কিং ন পশ্যন্তি সাদরম্।  
তরাগমনহেতুশ্চ জ্ঞাতঃ শক্রমযানঘ ॥ 131 ॥

কর্তর্যং মম কিং রাম তথাপি ব্রুহি রাঘর।  
ইতি প্রচোদিতো রামঃ প্রহৃষ্টাত্মেদমব্রবীৎ ॥ 132 ॥

শ্রীরাম উবাচ  
দুর্জনঃ খলু রৈদেহীং গৃহীৎরা কোহপি নির্গতঃ।  
হৎরা তমাসুরং বীরমানযস্ব কপীশ্বর ॥ 133 ॥

মম দাস্যং কুরু সখে ভর বিশ্বসুখঙ্করঃ।  
তস্যাজ্ঞাং শিরসা তস্য গৃহীৎরা স কপীশ্বরঃ ॥ 134 ॥

রিধেযং রিধিরত্ত্ব চকার শিরসা স্নযম্।  
ইদং নামসহস্রং তু যোহধীতে প্রত্যহং নরঃ ॥ 135 ॥

দুঃখৌঘং নশ্যতে তস্য সংপত্তির্র্ধতে চিরম্।  
রশ্যং চতুর্বিধং তস্য ভরত্যের ন সংশযঃ ॥ 136 ॥

রাজানো রাজপুত্রাশ্চ রাজকীয়াশ্চ মল্লিগঃ।  
ত্রিকালপঠনাতস্য সিদ্ধিঃ স্যাৎকরসংস্থিতা ॥ 137 ॥

ব্রাহ্মে মুহূর্তে চোখায প্রত্যহং যঃ পঠেন্নরঃ।  
ঐহিকামুশ্মিকং সোহপি লভতে নাত্র সংশযঃ ॥ 138 ॥

সঙগ্রামশ্রনিরিষ্টানাং বৈরিরিদ্রারণং পরম্।  
জ্বরপাস্মারশমনং গুল্মাদিপ্লীহরারণম্ ॥ 139 ॥

সাম্রাজ্যসুখসংপত্তিদায়কং জপতাং নৃণাম্।  
য ইদং পঠতে নিত্যং পাঠযেদ্বা সমাহিতঃ ॥ 140 ॥

सर्वान् कामानराप्नोति रायुपुत्रप्रसादतः।  
किमत्र बह्नोक्तेन नान्यथा रामभाषितम् ॥ 141 ॥

यदिच्छेत् प्रत्यहं द्रष्टुं प्रयोजुर्योहयमद्भुतम्।  
कार्यसंसिद्धिरत्यर्थं सत्यं सत्यं रचो मम ॥ 142 ॥

॥ इति श्रीहनुमत्सहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ॥